राष्ट्रीय संगोष्ठी दिनांक 2-3 अक्टूबर, 2024

रचनात्मक कार्यक्रम : प्रयोग और चुनौतियां

संगोष्ठी के बारे में

गांधीजी के सामाजिक पुनर्निर्माण संबंधी विचारों में रचनात्मक कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। यह सामाजिक बदलाव का वह विकल्प था जिसको इससे पूर्व विश्व में किसी ने भी उपयोग में नहीं लाया था। गांधीजी का मानना था कि एक राष्ट्र के रूप में मौलिक कर्त्तव्यों के प्रति हमारी लापरवाही के कारण भारत में विदेशी प्रभुत्व जीवित और समृद्ध हुआ। इन कर्त्तव्यों की सामूहिक पूर्ति को संयुक्त रूप से रचनात्मक कार्यक्रम कहा जा सकता है। उनका मानना था कि 'मनुष्य के दैनंदिन क्रियाकलापों के अनुरूप ही उसके व्यक्तित्व का गठन होता है। इस दृष्टि से रचनात्मक कार्यक्रम सब लोगों, गरीब से गरीब व्यक्ति की भी क्रियाशीलता को अभिव्यक्त करने का, पुरुषार्थ करने का, संगठन-कौशल विकसित कर समाज-जीवन को उन्नत बनाने में योगदान देने का अवसर प्रदान करते हैं।'

चूंकि रचनात्मक कार्यक्रमों की बुनियाद में सदैव से साधन-शुद्धि का दृढ़ विचार रहा है। अतः रचनात्मक कार्यक्रम अर्थात् स्वदेशी, प्रेम तथा करुणा के कार्यक्रम। रचनात्मक कार्यक्रम सत्य, अहिंसा पर आधारित कार्यक्रम थे जिसमें उत्कृष्ट समाज के निर्माण की कामना विद्धमान थी।

गांधीजी के वर्धा आगमन के उपरांत कालांतर में रचनात्मक संस्थाओं की निर्मित ने इनकी कार्यप्रणाली और प्रभाव को और अधिक सुदृढ़ किया। स्वतंत्र प्राप्ति के पश्चात भी वर्तमान में यह संस्थाएं अपने-अपने स्तर पर सामाजिक पुनर्निर्माण और सशक्तिकरण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। वस्तुतः अपने कर्तव्यों के निर्वहन में जिन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है उसके संधान हेतु उन समस्याओं को ठीक तरह से जानना एवं समझना महत्वपूर्ण होगा।

यह संगोष्टी रचनात्मक कार्यक्रमों के प्रयोग एवं चुनौतियों के संदर्भ में आवश्यक बिंदुओं को रेखांकित करने में सहायक सिद्ध होगी। वक्ता एवं विषय विशेषज्ञ के तौर पर रचनात्मक प्रयोगों में संलग्न व्यक्तियों के माध्यम से वर्तमान में इनकी स्थिति, कार्यप्रणाली तथा चुनौतियों को जानना और समझना अत्यंत ही महत्वपूर्ण होगा।

पंजीकरण लिंक :

https://forms.gle/jg93ECBkiaYpsdUS7

विषय

रचनात्मक कार्यक्रम : प्रयोग और चुनौतियां

उप-विषय

1. कौमी एकता
2. अस्पृश्यता निवारण
3. शराबबन्दी
4. खादी
5. दूसरे ग्रामोद्योग
6. गांवों की सफाई
7. बुनियादी तालीम
8. बड़ों की तालीम
9. स्त्रियों का उत्थान
10. आरोग्य के नियम की शिक्षा
11. प्रांतीय भाषाएं
12. राष्ट्र भाषा
13. आर्थिक समानता
14. किसान
15. मज़दूर
16. आदिवासी
17. कुष्ठ रोगी
18. विद्यार्थी

- **संगोष्ठी पंजीकरण की अंतिम तिथि : 30 सितंबर , 2024**
- **संगोष्ठी शोध-पत्र प्राप्ति की अंतिम तिथि : 1 अक्तूबर , 2024**
- **संगोष्ठी-पत्र संप्रेषण हेतु ई-मेल : seminargps23@gmail.com**
- **हिंदी में युनिकोड (Kokila Font 16) अंग्रेजी में Times New Roman(Font 16, Space 1.5 cm)**
- **पंजीकरण शुल्क विवरण:**

शिक्षक – 750/-
शोधार्थी – 250/-
विद्यार्थी – 150/-
UPI ID : 8318331412@ybl

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविलय, वर्धा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

मध्य भारत के सतपुड़ा रेंज की पहाड़ियों पर अवस्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय गांधी के सपनों का भारत की तरह भारत के सपनों का विश्वविद्यालय है। महात्मा गांधी के सपनों के भारत में एक सपना राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को प्रतिष्ठित करने का भी था। राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के उद्गम से उद्गमित नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन (10-14 जनवरी, 1975) में यह प्रस्ताव पारित किया गया था कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को आधिकारिक भाषा के रूप में स्थान दिया जाए तथा एक अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना की जाय जिसका मुख्यालय वर्धा में हो। यह संभव हुआ वर्ष 1997 में – जब भारत की संसद द्वारा एक अधिनियम पारित करके महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय की स्थापना वर्धा में हुई। महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने स्वरूप में एक अनूठा विश्वविद्यालय है। हिंदी के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से कार्यरत यह दुनिया में अकेला विश्वविद्यालय है जहाँ फ्रेंच,चीनी, स्पेनिश और जापानी जैसी विदेशी भाषाएं हिंदी माध्यम से पढ़ाई जाती हैं। 'ग्लोबलहिंदी' की राह पर यह मील का पत्थर है। विश्वविद्यालय की कार्य-संस्कृति, प्रशासन व कार्य-व्यवहार में गांधी के विचार मार्गदर्शन का कार्य करते हैं। ज्ञान-विज्ञान की एक संवाहक भाषा के रूप में हिंदी केंद्र-बिंदु बने, विश्वविद्यालय इस महत्वाकांक्षी योजना की सफलता हेतु कटिबध्द है।

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

गांधी एवं शांति अध्ययन सामाजिक विज्ञानों के अध्ययन के क्षेत्र में एक प्रभावशाली कदम है। यह विषय गांधी की अवधारणा और शांति से इसकी संबद्धता को व्यापक दायरे में समझने की एक दृष्टि देता है। अंतरानुशासनिक चरित्र का यह पाठ्यक्रम नैतिक-दृष्टि, सुशासन, विकेन्द्रीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का सरंक्षण एवं इसकी राजनीति के साथ-साथ भू-राजनीति एवं सतत विकास की शिक्षा को अपने में शामिल करता है। यह विषय विद्यार्थी को सतत विकास एवं शांति के साथ उसकी संबद्धता को शिक्षण, शोध एवं विस्तार के व्यापक कार्यक्रमों तक पहुँचाता है। गांधी एवं शांति के विभिन्न पहलुओं को व्यापक-दृष्टि से व्याख्यायित करने वाला यह पाठ्यक्रम न सिर्फ विद्यार्थियों के कौशल एवं क्षमता निर्माण में वृध्दि करता है, बल्कि उन्हें विकास एवं शांति के क्षेत्र में आनेवाली समस्याओं और चुनौतियों को समाधान के लिये प्रेरित भी करता है। गांधी के मूल्यों एवं सिध्दांतों के प्रति गंभीर अध्ययन व शोध के साथ-साथ मानवता के लिए प्रतिबध्दता पैदा करने के उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम सन् 2004 से संचालित किया गया है। अंतरानुशासनिक पध्दति से तैयार यह पाठ्यक्रम संपूर्ण मानविकी एवं समाज वैज्ञानिक अध्ययन का ऐसा सम्मिलित अध्ययन प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न ज्ञानानुशासनों को देखने व समझने की नई दृष्टि देता है।

कार्यक्रम-विवरण

प्रथम दिवस : 2 अक्टूबर, 2024

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ

उद्घाटन सत्र : 03:00 - 04:15 बजे

चाय अंतराल: 4:15 - 4:30 बजे

प्रथम अकादमिक सत्र : 4:15 - 6:00 बजे

शिक्षा का रचनात्मक प्रयोग

द्वितीय दिवस : 3 अक्टूबर, 2024

गालिब सभागार, तुलसी भवन, साहित्य विद्यापीठ

द्वितीय अकादमिक सत्र : 10:30 - 11:30 बजे

ग्रामीण आवश्यकता : आत्मनिर्भरता और रचनात्मकता

चाय अन्तराल : प्रात: 11.30 – 11.45 बजे

तृतीय अकादमिक सत्र : 11:45 - 01:30 बजे

पर्यावरण, पारिस्थिकी : जैव विविधता और रचनात्मकता

भोजन अवकाश : 1:30 - 3:00 बजे

चतुर्थ अकादमिक सत्र : 3:00 - 04:30 बजे

लघुता का सौंदर्य: मध्यम, लघु और सूक्ष्म उद्योगों की रचनात्मकता

चाय अंतराल : 04:30 - 04:45 बजे

पंचम अकादमिक सत्र : 4:45 - 6:00 बजे

सामाजिक सौहार्द : सामंजस्य निर्भरता के रचनात्मक प्रयोग

संरक्षक

प्रो. कृष्ण कुमार सिंह

कुलपति: म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

आयोजन समिति

संयोजक

डॉ. राकेश कुमार मिश्र (मो. 9970251140)

डॉ. मनोज कुमार राय (मो. 9404822608)

सह-संयोजक

डॉ. चित्रा माली

डॉ. अभिषेक सिंह

संयोजक मंडल

डॉ. पंकज कुमार सिंह, डॉ. देवेन्द्र मौर्य, डॉ. प्रिंस सिंह, सुमन्त कुमार मिश्र योगेश जांगिड़, चंद्रमणि राय, सौरभ मिश्र, अभिषेक द्विवेदी, संदीप शुक्ल, गुलशन, प्रवीण, सोनम, महेश दुर्गम, उत्तम केते, निरंजन

राष्ट्रीय संगोष्ठी

गांधी जयंती के अवसर पर आयोजित

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

रचनात्मक कार्यक्रम: प्रयोग और चुनौतियां

2-3 अक्टूबर, 2024

आयोजक

गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

गांधी हिल्स, वर्धा - 442 001 (महाराष्ट्र)

दूरभाष: 07152- 230313 /मो. 9970251140

Email: seminargps23@gmail.com

वेबसाइट : *www.hindivishwa.org*